कुरआन की फ़ज़ीलत

(तफ़्सीर अल बयान से चयन)

लेखकः आयतुल्लाहिल उज़्मा सैय्यद अबुल क़ासिम अलख़ुई

हिन्दी अनुवादः फाज़िले नबील चौधरी सैय्यद सिबते मुहम्मद नक़वी साहब

जब बात क़ुरआन की फ़ज़ीलत के बारे में हो तो उचित है कि ठहरे और कुरआन मजीद की अज़मतों के सामने, उसकी महिमाओं के समक्ष अपने को निहायत हक़ीर, अत्यन्त तुच्छ समझे और इस सिलसिले में कोई राय ज़ाहिर करने से अपनी आज़िज़ी, असमर्थता का मान लेना ज़ियाद अच्छा है। कुरआन के बारे में कोई क्या कह सकता है, उसकी महिमा को इंसान किस तरह बयान कर सकता है ? एक 'मुम्किन' (सम्भाव्य अस्तित्व), 'वाजिब' (अनिवार्य अस्तित्व) के कलाम की गहराईयों का क्या दर्क एवं बोध कर सकता है ? एक क़लमकार कुरआन के बारे में क्या लिख सकता है ? एक ख़तीब, वक्ता क्या बयान कर सकता है क्योंकि सीमित अपनी सीमाओं में ही तो अपने चिंतन की अठखेलियां दिखा सकता है।

कुरआन की अज़मत के लिए उसकी उच्चता के लिए यही काफ़ी है कि यह अल्लाह का कलाम और हज़रत पैग़म्बर (स०) का चमत्कार है। उसकी आयतें इंसान के सहीह राह पा जाने और सौभाग्य, खुशनसीब की ज़िम्मेदार हैं। हर ज़माने में सभी इंसानों की हिदायत की ज़िम्मेदार हैं और इंसान की अनन्त कामयाबी की ज़ामिन हैं। लोक-परलोक में अनन्त सौभाग्य/अबदी सआदत की कफ़ील हैं, बोझ उठाये हुए हैं।

''बेशक यह कुरआन सीधी राह दिखाता है।''

''किताब हमने आप पर उतारी ताकि आप लोगों को अंधेरों से उजाले की ओर लायें और ख़ुदा के हुक्म से उसके रास्ते की ओर लोगों का दिशा-निर्देश करें।''

''हाँ ! कुरआन लोगों के लिये खुला हुवा बयान, हिदायत और परहेज़गारों के लिए सदोपदेश हैं।''

इसी सिलसिले में हज़रत पैग़म्बर (स०) से यह रवायत है कि हुज़ूर (स०) ने इरशाद फ़रमाया- ''ख़ुदा के कलाम को सभी बातों पर वही फ़ज़ीलत हासिल है, वही श्रेष्ठता प्राप्त है जो ख़ुदा को सारी सृष्टि पर हासिल है।''

अच्छा है कि इस द्वार में प्रवेश से पहले आदमी ठहर जाये और कुरआन की फ़ज़ीलत के बयान को उन लोगों को सौंप दे जो कुरआन के हम पल्ला या बराबर वाले हैं और जो कुरआन का पूरा ज्ञान रखते हैं, उसकी हक़ीक़त को सबसे ज़ियादा जानते हैं और जो कुरआन की महिमाओं की ओर इंसान का मार्ग-दर्शन करते हैं। जो श्रेष्ठता में खुद ही कुरआन के समतुल्य हैं और हिदायत के काम में कुरआन के शरीक, साझी हैं। उनके दादा हज़रत पैग़म्बर (स०) ने ही लोगों के सामने कुरआन पेश किया। उसके आदेशों की ओर लोगों का मार्ग-दर्शन किया, उसकी शिक्षाओं को फैलाया।

उनके और कुरआन के बारे में हुज़ूर (स०) ने फ़रमाया,

''मैं तुम में दो चीज़ें छोड़े जाता हूँ-अल्लाह की किताब और अपने अह्ल-ए-बैत इतरत (परिजन)। यह दोनों एक-दूसरे से कदापि नहीं बिछड़ेंगे यहां तक कि 'कौसर' के हौज़ पर मुझसे मुलाकात करें।''[5]

यह हदीस, 'हदीस-ए-सक़लैन' के नाम से मश्हूर है जिसके बिल्कुल ठीक होने के बारे में किसी शुब्हे, शंका की कोई गुंजाइश नहीं है। इस हदीस से अच्छी तरह स्पष्ट हो जाता है कि 'पैग़म्बर (स०)' के 'परिजन' और 'कुरआन' समतुल्य हैं। इसलिये हज़रत (स०) के अह्ल-ए-बैत (अ०) कुरआन के सबसे अच्छे रहनुमा/मार्ग-दर्शक हैं। वह उसकी फ़ज़ीलतों को बाक़ाइदा, उसकी श्रेष्ठताओं को विधिवत् जानते हैं इसलिए कुरआन के बारे में उन्हीं की बातों पर बस करना चाहिए, उन्हीं स रौशनी लेना चाहिए। कुरआन की फ़ज़ीलतों के बारे में मअ़सूम इमामों से बहुत रवायतें हैं जिनकों अल्लामा मज्लिसी ने 'बिहार-उल्-अनवार' की 19 वीं जिल्द में एकत्रित कर दिया है। हम यहां पर कुछ हदीसों का उल्लेख करेंगे।

हारिस हमदानी का बयान है कि-"मस्जिद में पहुंचा तो देखा कि कुछ लोग बैठे हुए आपस में वाद-विवाद कर रहे हैं। मैं हज़रत अली (अ०) की सेवा में आया और यह वाक़िआ बयान किया। हज़रत ने फ़र्माया "सचमुच इन लोगों ने यही ढंग अपना लिया है ? " निवेदन किया, जी हाँ फ़र्माया, "मैंने हज़रत पैग़म्बर (स०) से सुना कि जल्दी ही कुछ झगड़े सिर उठायेंगे। तो मैंने आपसे पूछा है अल्लाह के पैग़म्बर ! इन झगड़ों से बचने का क्या उपाय ? हुज़ूर (स०) ने फ़र्माया कि 'ख़ुदा की किताब'। ख़ुदा की किताब में पिछली और आने वाली खबरें हैं, तुम्हारे विवादों का हल है, यह असत्य को बड़े स्पष्ट रूप से खोल देती है। यह हक़ीक़त/यथार्थ है कोई मज़ाक नहीं है। ऐसा ग्रन्थ है अगर कोई अत्याचारी इसको छोड़ दे, ख़ुदा उसकी कमर तोड़ देगा, उसको अपमानित कर देगा। जो क़ुर्आन के अलावा कहीं और से मार्ग-दर्शन खोजेगा, भटक जायेगा। वह अल्लाह की मज़बूल रस्सी है। युक्तिपूर्ण ग्रन्थ/हिकमत आमेज़ किताब है, सन्मार्ग है। इस किता ब में लालच-लोभ का गुज़र नहीं। इसकी बदौलत ज़बानें भ्रम से बची रहती हैं। यह ऐसी किताब है कि धर्माचार्य, विद्वान निरन्तर सोच-विचार के बावजुद सेर या तृप्त नहीं होते। बार-बार पढ़ने से यह किताब पुरानी नहीं होती। इसके अजायबात या विचित्र बातें कभी समाप्त नहीं होतीं। यह वही किताब है जिसको सुनकर जिन्नात की ज़बान पर सहसा यह शब्द आ गये थे, "हमने एक विचित्र क़ुर्आन सुना है।" जो क़ुरआन के ज़रीऐ बात करेगा उसकी सच्चाई मुसल्लम या मान्य है। जो इसके ज़रीऐ फैसला करेगा उसका निर्णय न्याय पर आधारित होगा। जो इसके अनुसार चलेगा पुण्य पायेगा। जो लोगों को इसकी तरफ़ बुलायेगा तो गोया उसने सन्मार्ग की तरफ दिशा-निर्देश किया है। इसके उपरान्त हज़रत अली (अ०) ने हारिस से फ़र्माया कि इस हदीस को याद कर लो 16 इस हदीस में बहुत महत्वपूर्ण बिन्दुओं की ओर इशारा किया गया है। हम उनमें से कुछ को स्पष्ट करेंगें-

(1) हुज़ूर (स०) ने फ़र्माया, **"ख़ुदा की किताब में बीते और आने वाले समय की ख़बरें हैं।"**

इस हदीस का संकेत हो सकता है, उन बातों की ओर हो जो परलोक में सामने आने वाली है। 'बरज़ख़' 'हिसाब-किताब'.........इन तमाम बातों का ज़िक्र क़ुरआन में विस्तार से है। हज़रत अली (अ०) ने अपने एक व्याख्यान में फ़र्माया है कि, "इस क़ुर्आन में उन लोगों की चर्चा है जो तुमसे पहले जा चुके , तुम्हारे विवादों का फ़ैसला इसमें है और तुम्हारे परलोक और क़यामत का वर्णन इसमें है।"[7]

हो सकता हैं कि ग़ैबी, अदृश्य बातों की ओर संकेत हो जो इसी दुनिया में मगर आगे चलकर होने वाली हैं और यह भी हो सकता है कि पिछली उम्मतों के उन वाक़िओं की ओर इशारा हो जो इस उम्मत में होने वाले हैं। जैसा कि हज़रत पैग़म्बर (स०) की एक हदीस में है **"इस उम्मत में वह सब कुछ होगा जो पिछली उम्मतों में हो चुका है।"**[8]

(2) हुज़ूर (स०) ने फ़र्माया, **"जो अत्याचारी इसको छोड़ देगा ख़ुदा उसकी कमर तोड़ देगा।"**[9] इस वाक्य में इस बात की तरफ़ संकेत है कि ख़ुदा क़ुर्आन को अत्याचारियों के अत्याचार से बचाये रखेगा। पहले वाले पैग़म्बरों के ग्रन्थों की भाँति वह क़ुर्आन में हरगिज़ फेर-बदल नहीं कर सकते ताकि इस फेर-बदल से इस पवित्र ग्रन्थ कि विश्वसनीयता मिट जाये और लोग इसकी तिलावत त्याग दें। बल्कि ख़ुदा इस किताब विधिवत सुरक्षा करेगा और लगभग यह बात इस वाक्य में कही गयी है कि, **"इस किताब में लोभ-लालच का कोई गुज़र नहीं"** यअ्नी-लोग मनमाने ढंग से इसका बदल नहीं सकते।

(3) इस वाक्य में इस बात की तरफ़ भी संकेत है कि अगर लोग अपने इरादों में क़ुर्आन की तरफ़ झुकें, अपने आचार-विचार में क़ुर्आन को मानदण्ड बनायें तो उन्हें सन्मार्ग मिल जायेगा। उनके निर्णय न्यायोचित होंगे और सत्य-असत्य एक दूसरे से अलग-विलग हो जायेंगे।

हाँ ! अगर इस्लामी उम्मत क़ुर्आन का ध्यान रखे और उसके बचन पर चले तो सत्य एवं असत्य वालों का बोध-ज्ञान मिल जायेगा और हज़रत पैग़म्बर (स०) के अहूल-ए-बैत का बोध प्राप्त होगा कि जिनको हज़रत पैग़म्बर (स०) ने क़ुर्आन का समतुल्य ठहराया है।

अगर इस्लामी पंथ क़ुर्आन से सदोपदेशों के प्रकाश-पुंज से रोशनी लेता तो इस दुखदायी यातना, दर्दनाक अज़ाब से बचा रहता और अंधेरे में इस तरह हाथ-पाँव न चलाता। इस तरह की अवमानना का शिकार

न होता। ख़ुदा का कोई हुक़्म विकृत न किया जाता और एक क़दम भी सन्मार्ग से विमुख न होता।

लेकिन मुसलमानों ने क़ुर्आन को पीठ-पीछे डाल दिया, मनोकामनाओं की पैरवी की, असत्य के झण्डे तले शरण ली और नौबत यहां तक पहुंच गयी कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान को 'काफ़िर' कहने लगा और उसे क़त्ल करके ख़ुदा की निकटता प्राप्त करने लगा। सम्मान समाप्त कर दिया गया, माल दूसरों के लिए जायज़ ठहरा दिया गया। यह मतभेद इस बात का सबसे सुन्दर प्रमाण है हक मुसलमानों ने क़ुर्आन से मुंह मोड़ लिया है। क़ुर्आन का परिचय देते हुए हज़रत अली (अ०) फ़र्माते हैं-

"इसके बअ्द ख़ुदा ने हज़रत पैग़म्बर (स०) पर किताब जो ऐसा प्रकाश-पुंज है कि जिसकी शम्अें गुल नहीं होंगी, ऐसा चिराग़ है जिस की रोशनी बुझेगी नहीं। ऐसा समुद्र है जिसकी थाह नहीं मिलती, ऐसा रास्ता है जिस पर चलने से गुमराही नहीं होती, वह किरण जिस की रौशनी मद्धिम नहीं होती, सत्य-असत्य की वह विभाजन सीमा है जिस की नींव कभी खिसकती नहीं। वह स्वास्थ लाभ है जिसके बअ्द रोग का डर नहीं, वह सम्मान है जिसके सहायक कभी पराजित नहीं होते, वह सत्य है जिसके पक्षध ार बेसहारा नहीं होते। वह (क़ुरआन) ईमान का ख़ज़ाना और उसका केन्द्र है वह ज्ञान का उद्‌गम बल्कि ज्ञान का समुन्दर है। वह न्याय का बाग़ और उसका हौज़ है। इस्लाम की आधारशिला हक़ की बहती नहरें और समतल ज़मीनें इसी में हैं। यह वह समुद्र है जिसे प्यासे सुखा नहीं सकते, वह उद्‌गम है जिस पर आने वाले उसके पानी को तहनशील नहीं कर सकते। इसमें वह मंज़िलें हैं जिन के यात्री रास्ता नहीं भूल सकते। वह निशान हैं जिन्हें चलने वाले भुला नहीं सकते। वह पहाड़ी सिलसिला हैं जिन से गुज़रने वालों का पार पाना कठिन है।"

ख़ुदा ने इस क़ुरआन को धर्माचार्यों की प्यास की तृप्ति, धर्म विधि के विद्वानों के हृदय की बहार और सदाचारियों की विस्तृत राह ठहराया है। क़ुरआन वह दवा है जिसके बअ्द किसी बीमारी का कोई प्रश्न नहीं, वह ज्योति या नूर है जिसके बअ्द कोई अन्धेरा नहीं। वह बहुत मज़बूत और ठोस ज़रीआ है। ऐसी सुरक्षित शरणस्थली है जिसकी चोटियां ऊंची हैं जो इस को पसन्द कर ले उसके लिए सम्मान और शक्ति, जो इसमें प्रवेश कर जाये उसके लिए अम्न व अमान, जो इसकी पैरवी करे उसके लिए मार्ग-दर्शन है। जो इसे अपना ले उसके लिए तर्कना है। जो इसके द्वारा बात-चीत करे उसके लिए अति सुन्दर प्रमाण है। जो इसके ज़रीअे शास्त्रर्थ या मुनाज़रा करे उसके लिए सबसे अच्छा प्रमाण है। जो इसके माध्यम से वाद-विवाद करे उसके लिए सब से सुन्दर सफलता है। उसको मुक्ति दे जो इसे अपना ले। उसके लिए वाहन है जो इसे अपना ले। उसके लिए वाहन है जो इसे इस्तिअ्माल करे उसके लिए प्रतीक है जो इसके द्वारा निशाना लगाये । उसके लिए सिपर है जो इसके द्वारा सुल्ह-सलामती चाहे। उसके लिए ज्ञान है जो इसकी रक्षा करे। उसके लिए बहुमूल्य वाक् है जो इसकी रवायत, अनुहार करे और उसके लिए अति सुन्दर आदेश है जो इसके द्वारा निर्णय करे।" [10]

इस व्याख्यान का एक-एक वाक्य अर्थ का सागर अपने अंचल में लिए हुए हैं हज़रत अली का यह कथन कि, **"ऐसा चिराग़ है जिसकी रौशनी कभी बुझेगी नहीं।"** और इसी तरह के अन्य वाक्य इस त्थ्य की तरफ़ इशारा कर रहे हैं कि क़ुर्आन के अर्थ की कोई हद नहीं, क़ुर्आन क़यामत तक बिल्कुल नया रहेगा

अयाशी ने इस आयत जिस में कहा है कि, **"हर जाति के लिए एक हादी-पथप्रदर्शक है।"** [11] की तफ़सीर में हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर (अ०) से रवायत नक़ल की है-

"हादी-पथप्रदर्शक से हज़रत अली (अ०) मुराद हैं और हर युग में हमारे ही कुल से हादी और पथ प्रदर्शक होते रहेंगें। मैंने अर्ज़ की-मैं आप पर न्योछावर आप भी हादी और रहनुमा हैं ? फ़रमाया हां ! मैं हादी और रहनुमा हूँ क्योंकि क़ुर्आन सदैव ज़िन्दा है वह कभी लुप्त नहीं होगा। उसकी आयतें हमेशा ज़िन्दा रहेंगी अगर कोई आयत किसी जाति या व्यक्ति के बारे में उतरी है तो इसका यह मतलब नहीं कि उस जाति या व्यक्ति के न रह जाने से, आयत भी समाप्त हो जायेगी आयत भविष्य में भी उसी तरह बनी रहेगी जिस तरह पहले थी।"

हज़रत इमाम जाफ़रे सादिक़ (अ०) ने इर्शाद फ़र्माया-**"क़ुर्आन हमेशा ज़िन्दा है और कभी लुप्त नहीं होगा। वह उसी तरह कार्यरत रहेगा जैसे चांद-सूरज। वह आख़िर में भी उसी तरह रौशनी फैलायेगा जिस तरह पहले रौशनी फैला रहा था।"**

इन रवायतों से यह सत्य पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है कि क़ुर्आन हमेशा ज़िन्दा रहेगा, कभी फ़ना नहीं होगा।

और मौला (अ०) का यह वाक्य कि, **"ऐसा रास्ता जिस पर चलने से गुमराही नहीं।"** यअ़्नी बेशक क़ुर्आन एक ऐसा रास्ता है जिस पर चलने वाला कभी गुमराह नहीं हो सकता। खुदा वन्द-ए-आलम ने क़ुर्आन सब लोगों की हिदायत या पथ प्रदर्शन के लिए नाज़िल, अवतरित किया है। जो भी इस रास्ते पर चलेगा क़ुर्आन उसे भटकने से बचाये रखेगा।

हज़रत (अ०) के इस इर्शाद, **"सत्य-असत्य की वह अलग करने वाली सीमा जिस के आधार कभी डग-मगायेंगे नहीं।"** का अर्थ यह है कि ज्ञान और सत्य-बोध में क़ुर्आन के स्तम्भ गिर नहीं सकते या यह कि क़ुर्आन के शब्दों में कोई कभी-बेशी नहीं हो सकती। मतलब यह हुवा कि क़ुर्आन हमेशा तहरीफ़ और फेर-बदल से सुरक्षित रहेगा।

हज़रत (अ०) का यह फ़र्माना कि, **"वह न्याय का बाग़ और उसका हौज़ है।"** अर्थात् 'न्याय' विश्वास, कर्म, नैतिकता और सदाचार प्रत्येक दृष्टि से क़ुर्आन में मौजूद है। क़ुर्आन ने न्याय, इंसाफ़ के तमाम पहलू या समस्त पक्ष अपने आंचल में इकठ्ठा कर लिए।

हज़रत (अ०) का यह फ़र्मान कि,**"वह (क़ुर्आन) इस्लाम की आधार शिला/बुनियादी पत्थर है।"** यअ़्नी इस्लाम की पायदारी/सुदृढ़ता क़ुर्आन के कारण है। जिस तरह अिमारत अपनी नींव पर टिकी रहती है उसी तरह इस्लाम क़ुर्आन पर टिका हुवा है।

हज़रत (अ०) का यह इर्शाद कि, "हक़, सत्य की बहती नहरें और समतल ज़मींनें इसी क़ुर्आन में हैं।" यअ़्नी क़ुआन सत्य और यथार्थ के विकास की जगह है। जिस तरह पानी और समतल ज़मीन से फ़सल लहलहाने लगती है उसी तरह सच्चाईयां क़ुर्आन की गोद में परवान चढ़ती हैं। इस उदाहरण में इस बात की तरफ़ इशारा है कि क़ुर्आन से जुड़े बग़ैर सत्य तक पहुंचना असम्भव है। क्योंकि क़ुर्आन हक़ का केन्द्र हैं उस से हट के किसी भी हक़ या सत्य की कल्पना नहीं हैं।

हज़रत (अ०) का यह फ़रमाना कि, **"यह वह समुद्र है जिस को प्यासे सुखा नहीं सकते।"** यह वाक्य और इसके बाद वाले वाक्य इस तथ्य की तरफ़ इशारा कर रहे हैं कि क़ुरआन के मअ़्नी-मफ़ाहीम यअ़्नी अर्थ-अभिप्राय ढूढ़ने वाले कभी भी उसकी तह तक नहीं पहुंच सकते। क्योंकि इसके अर्थ असीमित हैं। और इस तरफ़ भी इशारा है कि क़ुरआन के असरारो रुमूज़/भेद एवं मर्म कभी ख़त्म नहीं हो सकते। अर्थ-अभिप्राय के जो चश्मे बह रहे हैं वह कभी सूखेंगे नहीं।

हज़रत का यह फ़रमाना कि **"वह एक पहाड़ी सिलसिला है जिस से गुज़रने वालों का गुज़रना कठिन है।"** अर्थात जो लोग क़ुरआन के मतलब की सब से ऊंची चोटी तक पहुंचना चाहते हैं वह पहुंच नहीं सकते। वह उसकी ऊंचाईयों को पा नहीं सकते। इस वाक्य से संकेत यह है कि कोई भी बुद्धिजीवी, दानिशवर और विचारक, मुफ़क्किर क़ुरआन की गहराईयों तक नहीं पहुंच सकता। क्योंकि अगर कोई व्यक्ति उसकी तह तक पहुंच जायेगा तो फिर तलाश और जुस्तुजू ,खोजबीन समाप्त हो जायेगी। जब कि वास्तविकता यह है कि क़ुरआन में ग़ौर-फ़िक्र चिन्तन-मनन कभी समाप्त नहीं होगा।

क़ुरआन की तिलावत की फ़ज़ीलत क़ुरआन ही अल्लाह का वह विधान है जिसमें इंसान के लिए लोक-परलोक की भलाईयां, दोनों जहान की ख़ुशनसीबी /सौभाग्य की ज़मानत है। क़ुर्आन मजीद की हर आयत हिदायत का झरना है। उसका हर वाक्य सहीह दिशा और कृपा का ख़ज़ाना है। जो आदमी भी लोक-परलोक में खुली हुयी कामयाबी का इच्छुक है, लोक-परलोक में अबदी सआदत/अनन्त मांगलिकता का चाहने वाला है उसके लिए आवश्यक है कि हर शाम-सवेरे अल्लाह की किताब का पाठ करे। उसकी आयतों को अपनी याददाशत के ख़ज़ाने में जवाहरात की भांति सुरक्षित कर ले और अपने चिन्तन का स्वभाव बना ले ताकि वह क़ुर्आन मजीद की रौशनी में अबदी सआदत का राह पर चलकर लाभ उठाये जिसमें किसी भी नुक़्सान का कोई भी मेल न हो।

मअ़्सूम इमामों और उनके परदादा हज़रत रसूल-ए-खुदा (स०) से, कलाम पाक की तिलावत करने में जो पुण्य है उसके बारे में उठती हुयी लहरों के समान, हदीसें मिलती हैं।

(1) पांचवें इमाम हज़रत मोहम्मद बाक़िर (अ०) से रवायत है कि हुज़ूर (स०) ने इरशाद फ़रमाया-**"जो व्यक्ति हर रात में दस आयतों का पाठ करेगा**

ख़ुदा उस को असावधानों में नहीं गिनेगा। जो आदमी पचास आयतो की तिलावत करेगा ख़ुदा उसको याद करने वालों और ज़िक्र करने वालों में गिनेगा। जो व्यक्ति सौ आयतों का पाठ करेगा ख़ुदा उसको उपासकों में गिनेगा। जो व्यक्ति दो सौ आयतों की तिलावत करेगा ख़ुदा उसको उन लोगों में गिनेगा जो ईश्वरीय भय से डरते हैं और ईश्वरीय महिमा के सामने अपने को हीन, नाचीज़ समझते हैं। जो आदमी तीन सौ आयतों की तिलावत करेगा ख़ुदा उसको कामयाब/सफल लोगों में गिनेगा जो व्यक्ति 500 आयतों की तिलावत करेगा ख़ुदा उसको उनमें शुमार करेगा जो उसकी उपासना में सदैव प्रयत्न शील रहते हैं। और जो व्यक्ति एक हज़ार आयतों का पाठ करेगा। ईश्वर उसको उन लोगों में शुमार करेगा जिन्होंने उसकी राह में भारी मात्रा में शुद्ध सोना ख़र्च किया है।''

(2)-छठे इमाम हज़रत जअ़्फ़र सादिक़ (अ०) ने इर्शाद फ़र्माया है कि -''क़ुर्आन अल्लाह का वह विधान है जो उसने इंसानों की भलाई और कल्याण के लिए भेजा है। मुसलमान के लिए शोभा की बात है कि वह इस क़ौल-क़रार में सोच-विचार करे, इसको देखे, समझे और कम से कम पचास आयतों का नित्य दिन पाठ करे।'' फिर यह भी इर्शाद फ़र्माया--''वह व्यवसायी जो रोज़गार में लगे रहते हैं वह रात को सोने से पहले एक सूरे की तिलावत क्यों नहीं करते ! ख़ुदा उनके खाते में हर आयत के बदले दस भलाईयां लिखेगा और दस गुनाह मुआफ़ करेगा।'' और यह भी फर्माया कि--''तुम्हें क़ुर्आन मजीद का पाठ करना चाहिए क्योंकि जन्नत के दर्जे क़ुर्आन की आयतों के इतने ही हैं। कयामत के दिन उन लोगों से जो इहलोक में क़ुर्आन की तिलावत करते रहे हैं कहा जायेगा तिलावत करो और ऊपर चढ़ते चले जाओ। जब एक आयत की तिलावत करेगा एक दर्जा ऊंचा हो जायेगा।''

हदीस की किताबों में इस तरह की अनगिनत रवायतें मौजूद हैं जो सज्जन ब्योरेवार जानना चाहते हों वह हदीस की किताबों से लाभाविन्त हो सकते हैं। कुछ हदीसों में यह भी आया है कि क़ुर्आन पाक का पाठ याददाशत से करने की अपेक्षा देख कर करने में कहीं अधिक अच्छाई है।

(3)-इस्हाक बिन अम्मार ने हज़रत इमाम जअ़्फ़र सादिक़ (अ०) से पूछा, मैं आप पर क़ुर्बान जाऊँ, बलि-बलि जाऊँ, मुझे क़ुर्आन कंठस्थ है तो क्या मैं उसे अपनी याददाशत से पढ़ू, यह ज़ियादा अच्छा है या क़ुर्आन देखकर पढ़ू?

इमाम ने फ़र्माया, ''क़ुरआन मजीद देखकर पढ़ो उसमें ज़ियादा अच्छाई हैं क्या तुम्हें नहीं पता कि क़ुर्आन को देखना भी अिबादत है ?''

और फ़र्माया, ''जो क़ुरआन मजीद सामने रखकर पाठ करेगा उसकी आंखों को भी बड़ा लाभ होगा। ख़ुदा उसके माँप-बाप के अज़ाब (यातना) में कमी कर देगा चाहे वह काफ़िर ही क्यों न हों।'' इन हदीसों में बहुत महत्वपूर्ण बिन्दुओं की ओर संकेत किया गया है-

1- क़ुर्आन मजीद देखकर पढ़ने से क़ुर्आन की प्रतियों में वृद्धि होती है अगर सिर्फ़ याददाशत से तिलावत की जाये तो क़ुर्आन की प्रतियां धीरे-धीरे कम फिर दुर्लभ और फिर अप्राप्त, नायाब हो जायेंगी।

2- क़ुरआन मजीद में कुछ ख़ुसूसियतें हैं जो देखकर ही पायी जा सकती हैं। जैसे-हदीस में है कि, देखकर पाठ करने से आंखों को स्वाद मिलता है, वह लाभान्वित होती हैं। क़ुर्आन को देख कर पढ़ने से आंखें बहुत सी बीमारियों से बची रहती हैं। खुली बात है कि यह विशेषता तभी उपलब्ध होगी जब आदमी क़ुर्आन देखकर तिलावत करेगा।

3- क़ुरआन मजीद को देखकर पढ़ने से नये-नये बिन्दु सामने आने लगते हैं। जब इंसान की निगाहें क़ुर्आन की आयतों पर पड़ती हैं तो इंसान के अस्तित्व में एक क्रान्ति दिखाई पड़ने लगती है, उसकी आंखों और अन्तदृष्टि दोनों के सामने से पर्दे उठने लगते हैं जब पढ़ने वाले की निगाह शब्दों पर पड़ती है तो वह अर्थ की गहराईयों में उतरने लगता है, क़ुर्आनी ज्ञान-विज्ञान के बहुमूल्य मोती सामने लाता है और अपने सोच-विचार में विशेष स्वाद अनुभव करता है और उसकी आत्मा क़ुर्आन के उजाले से जगमगा उठती है और दिल प्रकाश पुंज बन जाता हैं

हदीसों ने हमें इस तथ्य की ओर दिशा-निर्देश किया है कि घरों में क़ुर्आन की तिलावत करना ज़ियादा अच्छा इसलिए है कि-

(क) घरों में क़ुर्आन की तिलावत करने से इस्लाम की आवाज़ फैलती है। तिलावत का रवाज आम होता है। क्योंकि जब इंसान घर में क़ुर्आन का पाठ करेगा तो उसको देख के उसके बीवी-बच्चे और घर के दूसरे लोग भी तिलावत करेंगे और इस तरह क़ुर्आन फैलता चला जायेगा। अगर क़ुर्आन की तिलावत के लिए ख़ास जगहें नियत कर दी

जायें तो हर समय कुरआन की तिलावत न हो सकेगी।

(ख) घरों में कुरआन की तिलावत करने से इस्लाम की महानता बढ़ेगी क्योंकि जब रोज़ाना घरों से कुरआन के पाठ की आवाज़ें उठेंगीं तो सुनने वाले अवश्य ही प्रभावित होंगे। आप खुद कल्पना करें कि हर मुसलमान के घर से कुरआन की आवाज़ बलन्द हो तो इस्लाम का नाम कितना बलन्द होगा और सुनने वालों में कैसी क्रान्ति हो जायेगी।

(ग) घरों में कुरआन के पाठ से एक विशेष स्थान मिलेगा। एक हदीस में इस तरह मिलता है- "जिस घर में कुरआन की तिलावत की जाती है, अल्लाह का नाम लिया जाता है वहाँ बरकतों, सौभाग्य में बढ़ो तरी होती रहती है, फ़िरिश्ते आते रहते है। शैतान दूर होते रहते है।"

"ऐसे घर आस्मान वालों के लिए उसी तरह चमकते-दमकते हैं जैसे ज़मीन वालों के लिए तारे चमकते हैं।" "वह घर जिसमें कुरआन की तिलावत नहीं की जाती, जिसमें अल्लाह की चर्चा नहीं होती, उसमें अल्लाह की बरकतें कम हो जाती है। फ़रिश्ते जाने लगते हैं शैतान आने लगते हैं।"

हदीस में कुरआन के पाठ की वह फ़ज़ीलतें लिखी हैं जिन को पढ़ के मानव-बुद्धि हैरान है हुज़ूर (स०) ने इरशाद फ़रमाया- **जो शख़्स कुरआन के एक अक्षर की तिलावत करेगा ख़ुदा उसको एक नेकी अता करेगा और हर नेकी दस नेकियों के बराबर होगी।**

मैं यह नहीं कहता कि **"अलिफ़ लाम मीम" एक हर्फ़ है बल्कि 'अलिफ़' एक 'लाम' दूसरा और 'मीम' तीसरा हर्फ़ है।"** इस हदीस को सुन्नी उलमा ने भी नक़्ल किया है। 'क़रतबी' ने अपनी तफ़्सीर में 'तिरमिज़ी' के संदर्भ से लिखा है।

शीआ उलमा में सिक़्त-उल्-इस्लाम कुलैनी ने इस हदीस को छटे इमाम से रिवायत किया है।

कुरआन के अर्थ में चिन्तन-मनन कुरआन करीम की अनेक आयतों और हदीसों में भी 'कुरआन में चिन्तन-मनन' पर बल दिया गया है। एक जगह है- "कुरआन में चिन्तन-मनन क्यों नहीं करते क्या इनके दिलों पर ताले लगे हुए हैं ?"

इस आयत में उन लोगों की कड़ी निन्दा की गयी है जो कुर्आन का मतलब, अभिप्राय समझने में सोच-विचार नहीं करते। इब्न-ए-अब्बास ने हुज़ूर (स०) से रवायत नक़्ल की है कि हुज़ूर (स०) ने इरशाद फ़रमाया-

"कुरआन को ठहर-ठहर के एक-एक शब्द स्पष्ट करके पढ़ो और उसके अर्थ एवं अभिप्राय की खोज करो" अबी अब्दर्रहमान अस्सलमा से रवायत हैं कि- हुज़ूर (स०) के एक सहाबी ने मुझ से बयान किया कि हुज़ूर (स०) के सहाबी आप से दस आयतें हासिल करते थे और जब तक उन दसों आयतों को भली-भांति समझ नहीं लेते थे और उन पर अमल नहीं कर लेते थे तब तक और दूसरी आयतें नहीं लेते थे।"

हज़रत अली (अ०) कुछ लोगों के बीच तशरीफ़ रखते थे और जनाब जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी को 'विद्वान' कह कर याद कर रहे थे। एक शख़्स ने हज़रत (अ०) से पूछा कि आप के ज्ञान का ओर-छोर नहीं फिर भी आप जाबिर को 'आलिम' कह रहे हैं ?

"फ़रमाया जाबिर को इसलिए आलिम कह रहा हूँ कि जाबिर को इस आयत का भाष्य मअ़लूम है- "जिस ने आप पर कुरआन उतारा है वह आप को ज़रूर वापस लायेगा।"

कुरआन मजीद में चिन्तन-मनन के सिलसिले में बहुत सी आयतें हैं। 'बिहार-उल्-अनवार' के 19 वें खण्ड में बहुत सी रवायतें मिलेंगी। लेकिन कुरआन में चिनत्न-मनन के लिए हदीसों की कोई ऐसी आवश्यकता भी नहीं क्योंकि कुरआन ग्रन्थ है जिसको ख़ुदा ने इंसान की ज़िन्दगी का सम्पूर्ण विधान बना के उतारा है ताकि वह दुनिया में उसकी रौशनी में चलते हुए अपने परलोक को प्रकाशमय बनाये। और यह तभी होगा जब हम कुरआन में सोच-विचार करेंगे, उसकी गहराईयों में उतरेंगे। और इस हक़ीक़त की सच्चाई पर मानव-बुद्धि गवाह है।

जुहरी ने यह हक़ीकत चौथे इमाम हज़रत ज़ैनुल आबिदीन (अ०) से इस तरह रवायत की है कि हज़रत (अ०) ने फ़रमाया-

"कुरआन की आयतें ख़ज़ाना हैं जब एक ख़ज़ाना तुम्हारे सामने आये तो तुम्हारे लिए ज़रूरी है कि दूसरा ख़ज़ाना ढूंडो।"

पालने वाले ! हम सब को कुरआन और अहूल-ए-बैत से सम्पर्क साधने वालों में गिन और हमारे सारे अस्तित्व को कुर्आन और अहूल-ए-बैत के उजाले से उज्जवल कर दे और मुसलमान पंथ को कुरआन पर पूरी तरह चलने की भरपूर प्रेरणा प्रदान कर और कुरआन के सच्चे प्रहरी को सामने लाने में जल्दी कर-आमीन।